अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) संकल्प मात्र को ग्रहण करने वाला नय है-
(क) एवंभूत (ख) शब्द
(ग) ऋजुनय (घ) नैगम (घ)

(ii) कार्य की सिद्धि में मूल कारण है-
(क) निमित्त (ख) उपादान
(ग) निश्चय (घ) द्रव्य (ख)

(iii) आगम प्रमाण का 12 वाँ भेद है-
(क) आत्मागम (ख) परम्परागम
(ग) अनन्तरागम (घ) दृष्टिवाद (घ)

(iv) आलम्बन मार्ग है-
(क) आधार (ख) आधेय
(ग) अपवाद (घ) उत्सर्ग (ग)

(v) जड़ता भाव को दूर करने में विशेष रूप से सहायक है-
(क) द्रव्यानुयोग (ख) गणितानुयोग
(ग) धर्मकथानुयोग (घ) चरणकरणानुयोग (ख)

(vi) श्री कुन्थुनाथ स्वामी की प्रथम आर्या थी-
(क) रक्षी (ख) बन्धुमती
(ग) अंजुया (घ) अमिला (ग)

(vii) श्री मुनिसुव्रत स्वामी का छद्मस्थ काल था-
(क) 1 अहोरात्रि (ख) 3 वर्ष
(ग) 9 मास (घ) 11 मास (घ)

(viii) इर्यावही बन्ध का थोकड़ा चलता है-
(क) भगवती सूत्र में (ख) पन्नवणा सूत्र में
(ग) नन्दी सूत्र में (घ) अनुयोग द्वार सूत्र में (क)

(ix) ईर्यापथिक बंध नहीं करता है-
(क) ग्यारहवाँ गुणस्थानवर्ती (ख) बारहवाँ गुणस्थानवर्ती
(ग) तेरहवाँ गुणस्थानवर्ती (घ) चौदहवाँ गुणस्थानवर्ती (घ)

(x) पहले देवलोक में औघिक की अपेक्षा 47 बोलों में से बोल पाये जाते हैं-
(क) 33 (ख) 34
(ग) 35 (घ) 26 (ख)

(xi) विभंगज्ञान में समवसरण नहीं पाया जाता है-
(क) क्रियावादी (ख) अक्रियावादी
(ग) अज्ञानवादी (घ) विनयवादी (क)

(xii) नो संज्ञा बहुता में समवसरण पाया जाता है-
(क) क्रियावादी (ख) अक्रियावादी
(ग) अज्ञानवादी (घ) विनयवादी (क)

(xiii) सास्वादन समकित की अधिकतम स्थिति है-
(क) 4 समय (ख) 6 आवलिका
(ग) 1 समय (घ) 256 आवलिका (ख)

(xiv) आत्मा को मोक्ष की ओर अभिमुख करना है-
(क) केवली समुद्घात (ख) योग निरोध
(ग) आवर्जीकरण (घ) शुक्ल ध्यान (ग)

(xv) केवली समुद्घात के दूसरे समय में कितनी प्रकृतियों के असंख्यात खण्ड करते हैं-
(क) 52 (ख) 54
(ग) 108 (घ) 21 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) 48 मिनट समता परिणाम रहने पर ऋजुसूत्र नय सामायिक मानता है। (हाँ)
(ii) प्रश्न व्याकरण सूत्र धर्मकथानुयोग का आगम है। (नहीं)
(iii) व्यवहार राशि में मात्र भव्य जीव ही होते हैं। (नहीं)
(iv) प्याज, लहशून, आलू, रतालू आदि सूक्ष्म निगोद के भेद हैं। (नहीं)
(v) सुदक्खु जागरणा पाँचवें गुणस्थानवर्ती श्रावक-श्राविकाओं में होती है। (हाँ)
(vi) 9वें गुणस्थान के प्रथम भाग तक वेद का उदय रहता है। (हाँ)
(vii) जिसने पहले ईर्यापथिक बंध किया हो, उसको प्रतिपद्यमान कहते हैं। (नहीं)
(viii) ईर्यापथिक बंध का आठवाँ भंग अभवी जीव की अपेक्षा होता है। (हाँ)
(ix) अयोगी में क्रियावादी और विनयवादी, ये दो समवसरण होते हैं। (नहीं)
(x) केवली समुद्घात वाले समुद्घात करने से पहले आवर्जीकरण करते हैं। (हाँ)
(xi) केवली समुद्घात के चौथे समय में तीर्थंकर केवली के नाम कर्म की 21 प्रकृतियाँ उदय में रहती है। (हाँ)
(xii) केवली समुद्घात के आठवें समय में औदारिक मिश्र काय योग होता है। (नहीं)
(xiii) केवली समुद्घात के सातवें समय में कपाट आकार के आत्म-प्रदेशों का संकोच कर दण्डाकार किया जाता है। (हाँ)
(xiv) प्रथम समय में उत्पन्न हुए जीव अनन्तर आहारक कहलाते हैं। (नहीं)
(xv) भिन्न-भिन्न मतों एवं दर्शनों को अज्ञानवादी समवसरण कहते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	श्री अजितनाथ स्वामी गणधर	(क) नन्दा	95
(ii)	श्री सम्भवनाथ स्वामी शरीर मान	(ख) यश	400 धनुष
(iii)	श्री शीतलनाथ स्वामी माता	(ग) सिंह	नन्दा
(iv)	श्री वासुपूज्य स्वामी लांछन	(घ) 400 धनुष	महिष
(v)	श्री विमलनाथ स्वामी पिता	(च) सुदर्शन	कृतवर्मा
(vi)	श्री अभिनन्दन स्वामी शरीर मान	(छ) महिष	350 धनुष
(vii)	श्री अनन्तनाथ स्वामी प्रथम गणधर	(ज) 95	यश
(viii)	श्री महावीर स्वामी लांछन	(झ) कृतवर्मा	सिंह
(ix)	श्री अरनाथ स्वामी पिता	(य) श्री	सुदर्शन
(x)	श्री कुन्थुनाथ स्वामी माता	(र) 350 धनुष	श्री

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) कषायों पर विजय पाने में मेरा अनुयोग विशेष रूप से सहायक बनता है। धर्मकथानुयोग
(ii) मैं एक मुहूर्त्त में उत्कृष्ट 65536 भव कर सकता हूँ। निगोदिया जीव
(iii) मेरा रहस्य अपेक्षा में रहा हुआ है। स्यादवाद
(iv) मेरी शान्त मुद्रा का स्थिर चित्त से ध्यान करना रूपस्थ ध्यान है। सशरीरी अरिहन्त भगवान
(v) मैं उपादान का साधक भी हो सकता हूँ और बाधक भी। निमित्त
(vi) सभी तीर्थंकरों में से मेरी भव संख्या 9 है। अरिष्टनेमि स्वामी
(vii) सभी तीर्थंकरों में से मुझे पूर्वभव में द्वादशांगी का ज्ञान था। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव स्वामी
(viii) सभी तीर्थंकरों में मेरा आयुमान 10 हजार वर्ष था। नमिनाथ स्वामी
(ix) मेरा बन्ध मिथ्यात्व आदि नीचे के 10 गुणस्थानों में नहीं होता है। ईर्यापथिक बन्ध
(x) ईर्यापथिक बन्ध में दूसरा भंग मेरे अन्तिम समय में पाया जाता है। तेरहवें गुणस्थान
(xi) ईर्यापथिक बंध हमें ही होता है, अन्य किसी जीव को नहीं। सयोगी वीतरागी
(xii) मैं एक ऐसा योग हूँ, जो केवली समुद्घात के पहले और 8वें समय में होता हूँ। औदारिक काययोग
(xiii) मैं सभी द्वीप समुद्रों के बीच रहा हुआ हूँ। जम्बूद्वीप
(xiv) मैं दूसरे समय और प्रदेश को स्पर्श न करते हुए अर्थात् नहीं रूकते हुए गमन करने वाली गति हूँ। अस्पृश्यमान
(xv) हम समकिती होते हुए भी क्रियावादी समवसरण वाले नहीं कहलाते हैं। विकलेन्द्रिय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) चार प्रमाण के नाम लिखिए।

उ. 1. प्रत्यक्ष प्रमाण, 2. अनुमान प्रमाण, 3. उपमा प्रमाण, 4. आगम प्रमाण।

(ii) 'जियं' का भावार्थ लिखिए।

उ. पढ़े हुए ज्ञान को भूलना नहीं यानी सारणा, वारणा से अस्खलित किया हुआ है।

(iii) सप्तभंगी के अन्तिम चार भंग लिखिए।

उ. 4. स्याद् अवक्तव्य, 5. स्याद् अस्ति अवक्तव्य, 6. स्याद् नास्ति अवक्तव्य, 7. स्याद् अस्ति नास्ति अवक्तव्य।

(iv) आधेय और आधार भाव को समझाइए।

उ. जगत् के घट पटादि आदि सभी पदार्थ आधेय हैं, पृथ्वी आधार है। पुद्गल आधेय हैं और लोकाकाश आधार है। ज्ञान-दर्शन आधेय है और जीव आधार है।

(v) ईर्यापथिक बंध के आठ भंगों में सातवाँ भंग कहाँ पाया जाता है ?

उ. सातवाँ भंग भव्य जीव की अपेक्षा से दसवें गुणस्थान के अंतिम समय में।

(vi) ईर्यापथिक बंध के आठ भंगों के नाम लिखिए।

उ. ईरियावही बंध- 1. बांधा, बांधता है, बांधेगा, 2. बांधा, बांधता है, नहीं बांधेगा, 3. बांधा, नहीं बांधता है, बांधेगा, 4. बांधा, नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा, 5. नहीं बांधा,बांधता है, बांधेगा, 6. नहीं बांधा, बांधता है, नहीं बांधेगा, 7. नहीं बांधा, नहीं बांधता है, बांधेगा, 8. नहीं बांधा, नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा।

(vii) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में 47 बोलों में से नहीं पाये जाने वाले बोल लिखिए।

उ. अलेशी, मनःपर्यायज्ञान, केवलज्ञान, नो संज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, अयोगी, इस प्रकार कुल 7 बोल नहीं मिलते हैं।

(viii) क्रियावादी के 180 भेद किस प्रकार से होते हैं?

उ. जीवादि 9 तत्त्वों के स्व तथा पर से अठारह भेद। इन अठारह के नित्य-अनित्य की अपेक्षा से 36 भेद। इन 36 के काल, नियति, स्वभाव, ईश्वर और आत्मा की अपेक्षा से पाँच-पाँच भेद करने पर 180 भेद होते हैं।

(ix) आवर्जीकरण का दूसरा नाम क्या है और यह कितने काल का होता है?

उ. आवर्जीकरण का अर्थ अभिमुख करना है अर्थात् आत्मा को मोक्ष की ओर अभिमुख करना आवर्जीकरण है। आवर्जीकरण का काल असंख्यात समय प्रमाण अन्तर्मुहूर्त्त का है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़ा काल है। उससे क्षेत्र- असंख्यात गुणा है। कारण कि एक समय में असंख्यात क्षेत्र की स्पर्शना होती है। एक सूची में जितने आकाश प्रदेश आए हैं। उनमें से एक एक समय में एक एक आकाश प्रदेश निकाले तो असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी व्यतीत हो जावे। उससे द्रव्य अनन्त गुणे हैं। कारण कि एक-एक आकाश प्रदेश पर अनन्त-अनन्त द्रव्य लगे हुए हैं। उससे भाव अनन्त गुणे हैं। कारण कि एक-एक द्रव्य में पर्याय अनन्त गुण है।

(ii) नाम निक्षेप को परिभाषित कीजिए।

उ. जाति, द्रव्य, गुण, क्रिया आदि निमित्तों की अपेक्षा किये बिना किसी वस्तु या व्यक्ति का इच्छानुसार नाम रख देना, नाम निक्षेप है। जैसे किसी बालक का नाम उसके माता-पिता ने 'महावीर' रख दिया। यहाँ महावीर शब्द का जो अर्थ और गुण है, वह अपेक्षित नहीं है, बल्कि यह एक संज्ञा मात्र है।

(iii) प्रमाण और नय को परिभाषित कीजिए।

उ. अनन्त धर्मों को जब अभेद दृष्टि से पूर्ण रूप से ग्रहण किया जाता है तब वह ज्ञान प्रमाण कहा जाता है और जब उन अनन्त धर्मों में से किसी एक धर्म को लेकर चिन्तन किया जाता है तब वह ज्ञान, नय के नाम से जाना जाता है। प्रमाण वस्तु के पूर्ण रूप को ग्रहण करता है और नय, प्रमाण द्वारा गृहीत वस्तु के अंश को जानता है।

(iv) व्याख्या के प्रथम चार प्रकार लिखिए।

उ. 1. द्रव्य से द्रव्य का उपचार- जैसे काष्ट में वंशलोचन है।
2. द्रव्य से गुण का उपचार- जैसे यह जीव ज्ञानवन्त है।
3. द्रव्य से पर्याय का उपचार- जैसे यह जीव स्वरूपवान है।
4. गुण से द्रव्य का उपचार- जैसे क्रोधी जीव है।

(v) एक भव आसरी ईर्यापथिक बन्ध के 8 भंगों में छठे भंग के नहीं होने का कारण लिखिए।

उ. छठा भंग- नहीं बांधा था, बांधता है, नहीं बांधेगा- यह भंग उस जीव में पाया जाता है जिसने वर्तमान आयुष्य के पूर्व भाग में उपशम श्रेणि नहीं की, अतः ईर्यापथिक बन्ध नहीं किया। वर्तमान में वह जीव क्षपक श्रेणि कर रहा है, उस समय बांध रहा है। क्षपक श्रेणि में कम से कम अन्तर्मुहूर्त्त तक तो लगातार बंध करेगा ही, एक समय में कोई जीव मोक्ष में नहीं जा सकता, अतः अगले समयों में उसे ईर्यापथिक बन्ध करना ही पड़ेगा। अतः भविष्य में नहीं बांधेगा, यह अवस्था नहीं बनती है।

(vi) नारकी के कृष्णपक्षी और मिश्रदृष्टि में समवसरण, आयुबंध एवं भवी-अभवी बताइए।

उ. तीन समवसरण (क्रियावादी को छोड़कर) पाये जाते हैं। मनुष्य और तिर्यंच का आयुष्य बांधते हैं। भवी अभवी दोनों होते हैं। मिश्रदृष्टि में दो समवसरण (विनयवादी, अज्ञानवादी) पाये जाते हैं। आयुष्य का अबंध है। नियमा भवी है।

(vii) अप्काय के 27 बोलों में समवसरण, आयुबन्ध एवं भवी-अभवी बताइए।

उ. दो समवसरण (अक्रियावादी, अज्ञानवादी) पाये जाते हैं। तेजो लेश्या में आयुष्य का अबंध होता है। बाकी 26 बोलों में मनुष्य गति और तिर्यंच गति का आयुष्य बांधते हैं। भवी और अभवी दोनों होते हैं।

(viii) अक्रियावादी को समझाइए।

उ. क्रिया का अभाव मानने वाले अक्रियावादी कहलाते हैं अथवा क्रिया की आवश्यकता ही क्या है? केवल चित्त की पवित्रता होनी चाहिए, ऐसा एकान्त मानने वाले अक्रियावादी हैं। ये भी मिथ्यादृष्टि होते हैं। इनके 84 भेद हैं।

(ix) वचनयोग का निरोध करने के बाद से अयोगी बनने तक की प्रक्रिया लिखिए।

उ. वचन योग का निरोध करने के बाद प्रथम समय में उत्पन्न जघन्य योग वाले अपर्याप्त सूक्ष्म पनक जीव (निगोद जीव) के काययोग से असंख्यात गुण हीन काय योग का प्रति समय निरोध करते हुए असंख्यात समयों में सम्पूर्ण रीति से काययोग का निरोध करते हैं। काय योग का निरोध होने के साथ ही श्वासोच्छ्वास का निरोध भी हो जाता है।